

ए. एच. एम. आई. एस दूध प्रोत्साहन एवं परिवहन अनुदान योजना प्रणाली



स्पॉट-लाइट

पशुपालन विभाग, हिमाचल प्रदेश के लिए विकसित ए.एच.एम.आई.एस., डेयरी किसानों को प्रोत्साहन प्रदान करने तथा पात्र गैर-सरकारी दूध समितियों को आपूर्ति किए जाने वाले गाय एवं भैंस के दूध के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य सुनिश्चित करने के लिए एक ऑनलाइन प्रणाली है। आपूर्ति किए गए दूध का सत्यापित विवरण संबंधित समितियों द्वारा पोर्टल में दर्ज तथा विभाग द्वारा मासिक आधार पर संसाधित किया जाता है। इस प्रणाली के द्वारा प्रोत्साहन राशि, लाभार्थियों के बैंक खाते में मासिक आधार पर डी.बी.टी. के माध्यम से सीधे हस्तांतरित की जाती है। दूध परिवहन के लिए परिवहन अनुदान भी सीधे दूध समितियों के बैंक खातों में हस्तांतरित किया जाता है।

किसानों को पोर्टल के माध्यम से उनके पंजीकृत बैंक खातों में हस्तांतरित लाभों की तत्काल सूचना एस.एम.एस. के माध्यम से प्राप्त होती है। किसान ओ.टी.पी. प्रमाणीकरण के माध्यम से पोर्टल में लॉग-इन करके संबंधित दूध समितियों से आपूर्ति किए गए दूध एवं कटौती आदि का विवरण तथा सरकार द्वारा भुगतान की गई दूध प्रोत्साहन राशि की जानकारी भी प्राप्त कर सकते हैं।

एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश द्वारा विकसित यह भूमिका-आधारित, कागज रहित समाधान सभी प्रमुख हितधारकों, जैसे कि पशुपालन विभाग (दूध प्रोत्साहन एवं परिवहन अनुदान के प्रबंधन के लिए), बैंक (भुगतान के सत्यापन के लिए), कोषागार (बिलों की प्रोसेसिंग और प्रोत्साहन राशि हस्तांतरण के लिए), दूध समितियां (पंजीकरण, दूध आपूर्ति एवं परिवहन विवरण के प्रबंधन के लिए) और डेयरी किसानों आदि के लिए इंटरफेस प्रदान करता है। यह प्रणाली राज्य बजट तथा ई-बिल सॉफ्टवेयर के साथ भी एकीकृत है, जिससे किसी भी स्तर पर मैनुअल हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं रहती है।

प्रमुख विशेषताएं

ए.एच.एम.आई.एस. – दूध प्रोत्साहन एवं परिवहन अनुदान योजना प्रणाली की प्रमुख कार्यात्मक विशेषताएं:

- ➔ डेयरी किसानों को दूध प्रोत्साहन और सहकारी दूध समितियों को दूध ढुलाई अनुदान प्रदान करने के लिए संपूर्ण कार्यप्रवाह आधारित ऑनलाइन प्रणाली
- ➔ दूध समितियों द्वारा दूध आपूर्ति डेटा प्रविष्टि और सत्यापन
- ➔ प्रोत्साहन राशि का प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (डी.बी.टी.)
- ➔ समयबद्ध प्रोत्साहन वितरण हेतु मासिक स्वचालित भुगतान प्रक्रिया
- ➔ प्रोत्साहन एवं अनुदान वितरण की पुष्टि के लिए एस.एम.एस. अलर्ट
- ➔ किसानों के लिए दूध आपूर्ति, भुगतान और कटौतियां आदि जांचने के लिए ओ.टी.पी. आधारित सुरक्षित लॉगिन सुविधा
- ➔ मैनुअल हस्तक्षेप के बिना, कागज रहित और पूरी तरह से स्वचालित समाधान
- ➔ डेटा की सटीकता सुनिश्चित करने के लिए मेकर्स-चेकर्स सुविधा
- ➔ दूध समितियों को दूध ढुलाई अनुदान का सीधा हस्तांतरण
- ➔ राज्य बजट और ई-बिल प्रणालियों के साथ API आधारित एकीकरण
- ➔ पशुपालन विभाग, बैंकों, कोषागारों, दूध समितियों और किसानों के लिए भूमिका-आधारित पहुंच

श्री नानक चंद

अध्यक्ष, कामधेनु हितकारी मंच (दूध सहकारी समिति), बिलासपुर हिमाचल प्रदेश

प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री, श्रीमान सुखविन्द्र सिंह जी ने सदैव किसानों और दूध उत्पादकों के कल्याण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। इसी सोच के अंतर्गत, प्रदेश में दूध के मूल्यों में ऐतिहासिक वृद्धि की गई। आरम्भ में यह लाभ केवल उन्हीं दूध उत्पादकों को मिल पा रहा था जो हिमाचल प्रदेश मिल्कफेड को दूध आपूर्ति कर रहे थे। लेकिन 08 जुलाई 2025 को आरम्भ की गई एक दूरदर्शी एवं किसान-हितैषी पहल, दूध प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत अब सभी दूध उत्पादकों को, चाहे वह किसी भी गैर-सरकारी दूध सहकारी समिति के माध्यम से दूध बेच रहे हों, ₹3 प्रति लीटर की दर से दूध प्रोत्साहन राशि डी.बी.टी. (DBT) के माध्यम से सीधे उनके खाते में हस्तांतरित की जा रही है।



इस योजना से दूध उत्पादकों की आय में सुनिश्चित वृद्धि हुई तथा उन्हें दूध का उचित मूल्य मिलने से आर्थिक संबल मिला है। दूध उत्पादन की ओर किसानों का रुझान तेजी से बढ़ा तथा ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार के अवसर सृजित हुए हैं। इसके साथ ही पशुपालन को बढ़ावा मिलने से ग्रामीण अर्थव्यवस्था भी मजबूत हो रही है। यह योजना वास्तव में दूध उत्पादक किसानों के लिए संजीवनी के समान सिद्ध हुई है। इससे न केवल किसानों का मनोबल बढ़ा है, बल्कि पशुपालन को एक लाभकारी व्यवसाय के रूप में भी नई पहचान मिल रही है।

पशुपालन विभाग एवं राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केंद्र हिमाचल प्रदेश (NIC HP) के संयुक्त प्रयासों से विकसित ए.एच.एम.आई.एस. (दूध प्रोत्साहन एवं परिवहन अनुदान योजना) प्रणाली, दूध प्रोत्साहन तथा परिवहन अनुदान प्रबंधन के लिए एक अत्यंत उपयोगी साधन साबित हुआ है। यह प्रणाली पारदर्शी, कुशल, कागज़रहित और पूरी तरह से स्वचालित रूप से कार्य करती है।

मैं, राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केंद्र, हिमाचल प्रदेश द्वारा विकसित इस उत्कृष्ट सॉफ्टवेयर एप्लिकेशन के लिए अपनी शुभकामनाएं व्यक्त करता हूँ।

टेक टिप्स

समय प्रबंधन और स्मार्ट कार्य का 3-3-3 नियम

काम करने का 3-3-3 नियम उत्पादकता बढ़ाने का एक तरीका है जो सरलता और गहन कार्य पर केंद्रित है, जिसमें प्रायः एक दिन में निम्नलिखित तीन प्रमुख घटक शामिल होते हैं:

- ➔ तीन घंटे तक गहन और एकाग्रचित होकर काम करना
- ➔ तीन छोटे, लेकिन महत्वपूर्ण कार्यों को पूरा करना
- ➔ तरोताज़ा और व्यवस्थित रहने के लिए 3 नियमित रखरखाव या व्यक्तिगत कार्य करना या 3 छोटे ब्रेक लेना, इससे थकान से बचने और ध्यान केंद्रित करने में मदद मिलेगी



3-3-3 नियम दैनिक लक्ष्यों को प्राथमिकता के आधार पर सीमित करके काम के बोझ को कम करता है, व्यस्तता के स्थान पर गहन चिंतन को प्रोत्साहित करता है, दिन के लिए स्पष्ट संरचना प्रदान करता है और स्मार्ट कार्य के लिए कारगर है। यह उच्च-प्राथमिकता वाले कार्यों के लिए समय प्रबंधित करके उत्पादकता को बढ़ाता है, व्यस्त दिनों को प्रबंधनीय हिस्सों में विभाजित करके लक्ष्य प्राप्ति को बढ़ाता है तथा महत्वपूर्ण कार्यों को आवश्यक विरामों के साथ एकीकृत करके कामकाजी जीवन और निजी जीवन में संतुलन बनाए रखने में भी कारगर सिद्ध होता है।

इसके अतिरिक्त, चिंता एवं व्याकुलता को शांत करने के लिए भी एक लोकप्रिय 3-3-3 नियम है, जिसमें आप जो 3 चीजें देखते हैं, जो 3 आवाजें सुनते हैं और शरीर के 3 अंगों को हिलाते हैं, उनके नाम बताने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

नवीनतम गतिविधियां

- ➔ माननीय मुख्यमंत्री हिमाचल प्रदेश, श्री सुखविन्द्र सिंह द्वारा 04 अक्टूबर 2025 को सोलन जिले के दाइलाघाट में पशुपालकों के लिए दूध प्रोत्साहन तथा सहकारी दूध समितियों के लिए दूध डुलाई अनुदान योजना (ए.एच.एम.आई.एस.) का शुभारंभ किया गया।
- ➔ 14 अक्टूबर 2025 को माननीय ग्रामीण विकास मंत्री हिमाचल प्रदेश, श्री अनिरुद्ध सिंह द्वारा हिम-कवच ऐप लॉन्च की गई। एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश द्वारा विकसित तथा आई.ओ.एस. एवं एंड्रॉइड दोनों प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध यह ऐप राज्य में आपदा-प्रतिरोधी घरों के निर्माण के लिए एक सम्पूर्ण मार्गदर्शिका है।



- ➔ एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश द्वारा सरकारी कर्मचारियों में "आंतरिक उद्देश्य और सेवा-भाव" को बढ़ावा देने के लिए, 27 और 28 अक्टूबर 2025 को डॉ. मनमोहन सिंह हिमाचल प्रदेश लोक प्रशासन संस्थान फेयरलॉन, शिमला में राष्ट्रीय कर्मयोगी जन-सेवा कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश तथा पंजाब के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।
- ➔ सरकारी कामकाज में हिंदी भाषा के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए, एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश द्वारा 15 नवंबर 2025 को एक दिवसीय हिंदी समिति बैठक, हिंदी कार्यशाला और सम्मेलन का आयोजन किया गया।
- ➔ माननीय राजस्व मंत्री हिमाचल प्रदेश, श्री जगत सिंह नेगी द्वारा 20 और 21 नवंबर 2025 को भूमि प्रशासन में आधुनिक प्रौद्योगिकियों को अपनाने पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला के दौरान भू-नक्शा 5.0, माईडीड, ऑनलाइन म्यूटेशन रिक्वेस्ट मॉड्यूल तथा ऑनलाइन हस्ताक्षरित आर.ओ.आर. का शुभारंभ किया गया।
- ➔ एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश ने नराकास शिमला द्वारा वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए आयोजित कार्यक्रमों में, चित्र कहानी लेखन प्रतियोगिता के अंतर्गत सभी शीर्ष 3 पुरस्कार (प्रथम, द्वितीय और तृतीय) प्राप्त किए।



टेक अपडेट

Agentic RAG (Retrieval-Augmented Generation)

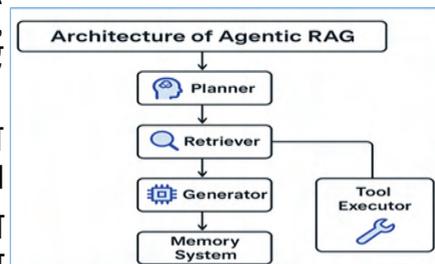
Agentic RAG कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) में उभरता हुआ और शक्तिशाली दृष्टिकोण है जो दो मुख्य ताकतों, पुनर्प्राप्ति-आधारित ज्ञान और एजेंटिक तर्क को जोड़ता है। पारंपरिक AI मॉडल प्रायः प्रशिक्षित डेटा पर निर्भर रहते हैं, जो पुराना या अधूरा भी हो सकता है। RAG सिस्टम इसे और अधिक उन्नत बनाकर उत्तर उत्पन्न करने से पहले बाहरी डेटाबेस या दस्तावेजों से संबंधित, अद्यतित जानकारी प्राप्त करते हैं। जबकि, Agentic RAG इससे भी एक कदम और आगे जाकर केवल जानकारी प्राप्त नहीं करता, बल्कि बुद्धिमान डिजिटल एजेंट की तरह सोचने, योजना बनाने, और कार्य करने में भी सक्षम होता है।

एक मानक RAG मॉडल में प्रक्रिया काफी रैखिक (linear) होती है, जैसे कि उपयोगकर्ता प्रश्न पूछता है, मॉडल संबंधित दस्तावेजों को खोजता है, और फिर उन परिणामों का उपयोग करके उत्तर उत्पन्न करता है। इसके विपरीत, Agentic RAG सिस्टम निर्णय-निर्माण और तर्क की परतें जोड़ता है। यह पहले प्रश्न का विश्लेषण करता है ताकि समझ सके कि किस प्रकार की जानकारी आवश्यक है, फिर योजना बनाता है कि उसे कैसे ढूँढना है। इसके बाद यह सर्च टूल या API का उपयोग करके डेटा निकालता है, उसकी सटीकता की जाँच करता है, और फिर सुव्यवस्थित एवं संदर्भित उत्तर तैयार करता है। यह प्रणाली बिल्कुल एक मानव शोधकर्ता की तरह अपने आउटपुट पर विचार कर सकती है और उसे सुधार कर अपना काम परिष्कृत भी कर सकती है।

Agentic RAG की संरचना

Agentic RAG की संरचना इस प्रकार डिज़ाइन की गई है कि AI को ज्ञान-पहुँच और स्वायत्त तर्क क्षमता दोनों मिलें। यह कई बुद्धिमान घटकों को जोड़ता है जो एक सोचने वाली प्रणाली के भागों की तरह मिलकर काम करते हैं। इसके प्रमुख घटक निम्नलिखित हैं:

- योजनाकार / Agent Brain: प्लानर सिस्टम का निर्णय-निर्माता है। यह उपयोगकर्ता की क्वेरी की व्याख्या करता है, आवश्यक जानकारी की पहचान करता है, टूल चुनता और क्रमबद्ध तरीके से पूरी प्रक्रिया को नियंत्रित करता है। यह तय करता है कि कब रुकना है या कब स्पष्टीकरण माँगना है।
- जानकारी खोजने वाला / Knowledge Finder: रिट्रीवर बाहरी स्रोतों जैसे वेक्टर डेटाबेस, दस्तावेज़ और वेब में खोज करता है। यह समानता खोज का उपयोग करके संबंधित जानकारी लाता है, ताकि AI को अपने पूर्व-प्रशिक्षित ज्ञान से आगे ताज़ा और सटीक डेटा मिल सके।
- भाषा मॉडल / Language Model: जनरेटर प्राप्त डेटा और क्वेरी का उपयोग करके तर्कपूर्ण, सारगर्भित और स्पष्ट भाषा में उत्तर उत्पन्न करता है। यह मानव-समान और संगठित आउटपुट तैयार करता है।
- स्मृति प्रणाली / Long-Term Context Store: मेमोरी सिस्टम पिछले संवाद और तथ्य संग्रहित करता है। यह एजेंट को सीखने, सुधारने और अल्पकालिक व दीर्घकालिक ज्ञान बनाए रखने में मदद करता है।
- टूल निष्पादक / Action Performer: टूल एक्जीक्यूटर API कॉल, वेब जाँच, गणना या लाइव डेटा प्राप्त करने जैसे वास्तविक कार्य करता है। यह तथ्य-सत्यापन और गतिशील डेटा संग्रह को सक्षम बनाता है।



सिस्सू झील

सिस्सू झील हिमाचल प्रदेश की लाहौल घाटी में एक प्रमुख पर्यटन स्थल है। यह कोई प्राचीन-प्राकृतिक झील ना होकर, एक मानव निर्मित जलाशय है। सिस्सू गाँव के पास, लगभग 3,100 मीटर (10,170 फीट) की ऊँचाई पर स्थित यह झील अटल सुरंग रोहतांग के उत्तरी पोर्टल से मात्र 6 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जहाँ पर आसानी से पहुँचा जा सकता है।

इसे सिस्सू ट्रेलीपैड के निकट एक पर्यटक आकर्षण के रूप में विकसित किया गया था, जो ग्लेशियरों के पिघलने से प्राप्त पानी और गाँव के साथ बहने वाली चंद्रा नदी के प्रवाह से पोषित होती है। यह झील एक शांत दर्पण की तरह काम करती है, जो लाहौल घाटी को घेरने वाली पीर-पंजाल पर्वतमाला की ऊँची तथा बर्फ से ढकी चोटियों को प्रतिबिंबित करती है। ऊँचे पहाड़ों में बने ग्लेशियरों से पोषित निकटवर्ती सिस्सू जलप्रपात, जिसे स्थानीय रूप से पलदेन ल्हामो धार के नाम से भी जाना जाता है, एक अद्भुत प्राकृतिक स्थल है।



क्षेत्र का ऐतिहासिक महत्व

सिस्सू क्षेत्र का इतिहास लाहौल घाटी में एक महत्वपूर्ण पारगमन बिंदु के रूप में इसकी भूमिका से जुड़ा हुआ है।

प्राचीन व्यापार मार्ग: सदियों से, सिस्सू प्राचीन रेशम-मार्ग पर यात्रा करने वाले व्यापारियों और यात्रियों के लिए एक महत्वपूर्ण पड़ाव रहा है, जो भारत को मध्य एशिया से जोड़ता था। चंद्रा नदी के किनारे स्थित होने के कारण, यह दुर्गम रोहतांग दर्रे को पार करने से पहले या बाद में एक रणनीतिक और आवश्यक विश्राम स्थल बन गया।

स्थानीय संस्कृति: सदियों में भारी बर्फबारी से ऊँचे पहाड़ी दर्रे बंद हो जाने के कारण यह गाँव अपने इतिहास के अधिकांश समय तक अपेक्षाकृत अलग-थलग रहा। इस अलगाव ने भारत-तिब्बती संस्कृतियों के अनूठे मिश्रण को संरक्षित करने में मदद की, जो स्थानीय वास्तुकला, त्योहारों (जैसे लोसर और हालडा) और बौद्ध धर्म के प्रबल प्रभाव में स्पष्ट दिखाई देता है। यह क्षेत्र कई महत्वपूर्ण आध्यात्मिक स्थलों का घर है, जिनमें लाहौल क्षेत्र के रक्षक माने जाने वाले क्षेत्रीय देवता राजा ग्येफांग का मंदिर भी शामिल है।

प्रशासन: ऐतिहासिक रूप से, लाहौल घाटी, कुल्लु उप-मंडल का हिस्सा थी, जो बाद में 19वीं शताब्दी के मध्य में ब्रिटिश नियंत्रण में आ गई। प्रशासन का प्रबंधन प्रायः स्थानीय जागीरदारों या पास के ऐतिहासिक गोंधला किले से जुड़े ठाकुरों द्वारा किया जाता था।

घूमने का उत्तम समय

सिस्सू झील की यात्रा वर्ष भर किसी भी समय की जा सकती है। मई से अक्टूबर तक यहाँ का मौसम सुहावना रहता है और चारों ओर हरियाली छाई रहती है, जबकि नवंबर से फरवरी तक यह क्षेत्र बर्फ से ढके खूबसूरत नजारों के साथ एक बर्फीले स्वर्ग में बदल जाता है।

कैसे पहुंचे

वायु मार्ग द्वारा

सिस्सू झील से निकटतम हवाई अड्डा लगभग 88 किलोमीटर दूरी पर कुल्लु जिले के भुंतर में स्थित, कुल्लु-मनाली हवाई अड्डा है। वहाँ से, सड़क मार्ग से, टैक्सी या सार्वजनिक परिवहन द्वारा सिस्सू झील तक पहुँचा जा सकता है।

रेल मार्ग द्वारा

निकटतम बॉड-गेज रेलवे स्टेशन कीरतपुर और चंडीगढ़ हैं, जो क्रमशः 231 किलोमीटर और 310 किलोमीटर दूर हैं। इन सभी स्थानों से सिस्सू झील के लिए टैक्सी और बसें उपलब्ध हैं।

सड़क मार्ग द्वारा

सिस्सू झील राष्ट्रीय राजमार्ग 03 पर मनाली से लेह की ओर लगभग 40 किलोमीटर दूरी पर स्थित है और सभी प्रमुख शहरों से सड़क मार्ग द्वारा अच्छी तरह से जुड़ी हुई है।

फैमिली कनेक्ट

ढाई दशकों से अधिक समय की उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान करने के उपरांत श्री बृजेन्द्र कुमार डोगरा, वैज्ञानिक-ई तथा श्री अनुराग गुप्ता, वैज्ञानिक-ई एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश से क्रमशः एन.आई.सी. हरियाणा एवं एन.आई.सी. पंजाब के लिए स्थानान्तरित हुए। एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश, बृजेन्द्र कुमार डोगरा तथा श्री अनुराग गुप्ता को उत्तम भविष्य की शुभकामनाएं प्रेषित

श्री चंद्र शेखर, वैज्ञानिक अधिकारी/इंजीनियर-एस.बी. और श्री सुकक्ष सिद्धपुरी, वैज्ञानिक अधिकारी/इंजीनियर-एस.बी., एन.आई.सी. में वैज्ञानिक-बी के पद पर नियुक्त होने के उपरांत एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश में अपनी मूल्यवान सेवाएं प्रदान करने के बाद कार्यमुक्त हुए। एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश दोनों अधिकारियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।



श्री पंकज ने एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश में आशुलिपिक ग्रेड-III के पद पर कार्यभार ग्रहण किया। एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश श्री पंकज के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश में लगभग दो वर्षों की उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान करने के उपरांत, श्री हिमांशु गुप्ता (आशुलिपिक ग्रेड-III), एन.आई.सी. मध्य प्रदेश के लिए स्थानान्तरित हुए। एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश, श्री हिमांशु गुप्ता के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं प्रेषित करता है।



03 अक्टूबर 2025 को, श्रीमती पूजा मान (वैज्ञानिक/तकनीकी सहायक-बी) एवं श्री योगेश को एक पुत्री, गियाणा का जन्म हुआ। एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश इस नन्ही परी के सुखद एवं सौभाग्यशाली भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता है।

एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश आप सभी को नव वर्ष - 2026 के लिए अच्छे स्वास्थ्य एवं सुखमय भविष्य की शुभकामनाएं प्रेषित करता है

उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य ना प्राप्त हो जाये। - स्वामी विवेकानंद

परामर्श: श्री अजय सिंह चैहल

संवाद पत्र टीम

मुख्य संपादक: श्री विनोद कुमार गर्ग

संपादक: श्री आशीष शर्मा

संपादक: श्री पृथ्वी राज

डिज़ाइन एवं रचनात्मक कलाएं: श्री सर्वजीत कुमार

राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केन्द्र

हिमाचल प्रदेश राज्य केन्द्र, छठी मंजिल, आम्सडिल बिल्डिंग

हिमाचल प्रदेश सचिवालय, शिमला, हिमाचल प्रदेश - 171002

sio-hp@nic.in +91-177-2624045

<https://nichimachal.nic.in>

योगदानकर्ता:

श्री मंगल सिंह

श्री जगदीप

श्रीमती मनीषा